

नमोनिया एवं डायरिया प्रगति रिपोर्ट

प्रलिस के लयः

नमोनया तथा डायरया प्रगरेस रपौरट

मेन्स के लयः

नमोनया तथा डायरया उनमूलन में नहलत सडसुयाँ

चरुा में कुयों?

हाल ही में 'इंटरनेशनल वैकुसीन एकुसेस सेंटर' (International Vaccine Access Centre) दुवारा जारी 'नमोनया एवं डायरया प्रगतररपौरट' के अनुसार, भारत ने नमोनया और डायरया के कारण बरुुओं की डृतु के डामलों की रोकथाम हेतु अपने टीकाकरण कुवरेज में डहतत्वपूर्ण प्रगतरकी है ।

प्रडुख डदुः

- रपौरट के अनुसार, वर्तडान में COVID-19 के कारण वशुव डर में सुवासुथु कुषेतर पर अतरररकुत दुबाव के डावकुडु डारत इस रपौरट में शडलल 5 में से 3 वैकुसीन के वैशुवकी लकुषु कु 90% तक पूरा करने में सफल रहा है ।
- गौरतलड है कु इस रपौरट में डडुधूरया, काली खडंसी और टटुनेस (डीपीटी) वैकुसीन, खसरा-नरुतुरण-वैकुसीन की पहली खुराक, हीडुफलस इनुफुलुएंजा टाइड डी, नुडुडुकुकल कंजुगेट वैकुसीन (पीसीवी) और रोटुवायरस वैकुसीन कु शडलल कया जाता है ।
- इस रपौरट के अनुसार, डारत में रोटुवायरस वैकुसीन के कुवरेज में 18% की वृदुध और नुडुडुकुकल नमोनया के खललफ वैकुसीन कुवरेज में 9% की वृदुध देखने कु डलली है ।
- गौरतलड है कु प्रतुतेक वरुष 12 नडंबर कु 'वशुव नमोनया दुवलस' डनया जाता है ।

नमोनया एवं डायरया प्रगतररपौरटः

- नमोनया तथा डायरया प्रगतररपौरट कु 'जुन डुडुडुस डुडुडुडु सुकुल ऑफ डुडुडु डेलुथ' (Johns Hopkins Bloomberg School of Public Health) की संसुथा इंटरनेशनल वैकुसीन एकुसेस सेंटर (International Vaccine Access Center- IVAC) दुवारा वारुषकी रूड से प्रकशत कया जाता है ।

सरकार के प्रयासः

- 100 डे एजेंडुः वरुष 2019 में डारत ने रोटुवायरस वैकुसीन से संबुधतल ररषुटुरीय सुतर पर कुलए गये अडुडुडुन कु पूरा कया । वैकुसीन की डहुँच में वसुतुतर के कुलते प्रतुवुरुष कुनड लेने वाले 26 डललडुन डरुुओं कु रोटुवायरस डायरया के खतरे से डरुाने में सहाडता प्ररडुत हुगी ।
 - गौरतलड है कु अगसुत 2019 में केंदुरीय सुवासुथु और परवलर कलुडुण डंतुरी ने सरकार के 100 दुनल के एजेंडे के तहत देश के सडुी ररकुडुओं और केंदुरशसतल प्रदुशुओं में डरुुओं के लडु रोटुवायरस वैकुसीन उडलडुध कररने की डरुत कही थी ।
- इस रपौरट में 10 संकेतकुओं पर नमोनया और डायरया से हुने वाली डुतुओं कु रोकने के लडु सरकररुओं के प्रयास का डुलुडुडुन कया गया, इनु संकेतकुओं में सुतनडुन, टीकाकरण, एंटीडुडुडुडु, ओआरएस (Oral Rehydration Solution-ORS), कुकल सडुलुडुडु आदल शडलल हैं ।
- इस रपौरट में शडलल 15 देशुओं में सररुफ 4 देश (डारत सहतल) ही ऐसे थे, कु अननुडु सुतनडुन (58%) के लकुषु कु प्ररडुत करने में सफल रहे ।
- हालुलकु इस रपौरट में शडलल लडुडुग सडुी देश नमोनया और डायरया का उडरुा सुनुशुकुतल कररने की दुशल में डरुुडुडुते दुखलई दुडु, डडुकर डारत उडरुा के सडुी कुर लकुषुओं कु प्ररडुत करने में असफल रहा ।

कारणः

- रपौरट के अनुसार, वरुष 2019 के दुररन डारत में डहतत्वपूर्ण प्रगतर देखने कु डलली थी, परंतु COVID-19 डुडुडुडुरी के कारण सुवासुथु कुषेतर पर

बढ़ रहे दबाव के कारण टीकाकरण और चिकित्सीय ऑक्सीजन की पहुँच प्रभावित हुई है ।

चुनौतियाँ:

- भारत को किसी भी अन्य देश की तुलना में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में नमोनिया और डायरिया से होने वाली मौतों का अधिक भार सहना पड़ता है ।
- एक अनुमान के अनुसार, भारत में नमोनिया और डायरिया के कारण प्रतिवर्ष पाँच वर्ष से कम आयु के लगभग 2,33,240 बच्चों की मृत्यु हो जाती है ।
- रपिर्ट के अनुसार, भारत में डायरिया के उपचार की कवरेज सबसे कम रही, इसके साथ ही मात्र 51% बच्चों को ओआरएस और 20% बच्चों को ही जकि सप्लीमेंट उपलब्ध हो पाता है ।
 - रपिर्ट के अनुसार, जकि और ओआरएस को एक साथ देने पर यह डायरिया से होने वाली मौतों को कम करने में काफी प्रभावी सिद्ध होता है ।
- IVAC के एक वरषिठ सलाहकार के अनुसार, नमोनिया और डायरिया के कारण प्रतिवर्ष होने वाली मौतों को टीके और सरल सिद्ध उपचारों के माध्यम से रोका जा सकता है जो हमारे पास पहले से ही उपलब्ध हैं, ऐसे में COVID-19 महामारी के उपचार की खोज के बीच इन बीमारियों से निपटने के प्रयासों से ध्यान नहीं हटाया जाना चाहिये ।

COVID-19 वैक्सीन और भारत:

- हाल में बहुराष्ट्रीय दवा निर्माता कंपनी फाईज़र के साथ अमेरिकी कंपनी मॉडर्ना ने COVID-19 के लिये अपनी-अपनी वैक्सीन के 90% से अधिक प्रभावी होने की घोषणा की है, जबकि बहुत से अन्य वैक्सीन के परीक्षण अपने अंतिम चरण में हैं ।
- इन परिणामों के बाद विश्व में इस महामारी से लड़ने की एक नई उम्मीद जगी है, हालाँकि भारत में सीरम इंस्टीट्यूट या भारत बायोटेक द्वारा विकसित वैक्सीन के तीसरे चरण के परीक्षण अभी व्यापक रूप से नहीं संचालित हुए हैं ।
- सरकार द्वारा फाईज़र वैक्सीन की कुछ खुराक प्राप्त करने के संदर्भ में उसके प्रतिनिधियों से भी बातचीत की जा रही है ।
- हालाँकि इस वैक्सीन को लगभग -70 °C तापमान पर रखा जाना अनिवार्य बताया गया है, ऐसे में इस क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे का अभाव भारत के लिये एक चुनौती बन सकता है ।
- इस वैक्सीन की सफलता से वैज्ञानिकों द्वारा कोरोना वायरस के स्पाइक प्रोटीन को लक्षित करने की रणनीति सिद्ध हुई है । गौरतलब है कि अधिकांश वैक्सीन निर्माताओं द्वारा इसी पद्धति का उपयोग किया जा रहा है ऐसे में भविष्य में वैक्सीन के विकास में कई अन्य सकारात्मक परिणामों की संभावनाएँ मज़बूत हुई हैं ।
- साथ ही यह भी संभव है कि इस प्रकार की तकनीक भविष्य में अन्य बीमारियों के लिये वैक्सीन निर्माण में सहायक हो सकती है ।

आगे की राह:

- भारत को ऐसी तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थानीय स्तर पर इन क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित करने का प्रयास करना चाहिये ।
- साथ ही भारत को अपनी कोल्ड चेन अवसंरचना को मज़बूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा, जो वर्तमान में साधारण वैक्सीन के लिये ही उपयुक्त है ।

स्रोत: द हट्टू

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/pneumonia-and-diarrhoea-progress-report-1>